अध्याय - २१

(१) श्री. व्ही.एच्. ठाकुर (२) अनंतराव पाटणकर और (३) पंढरपुर के वकील की कथाएँ।

इस अध्याय में हेमाडपंत ने श्री. विनायक हरिश्चंद्र ठाकुर, बी.ए., श्री. अनंतराव पाटणकर, पुणे निवासी तथा पंढरपुर के एक वकील की कथाओं का वर्णन किया है। ये सब कथाएँ अति मनोरंजक हैं। यदि इनका सारांश मननपूर्वक ग्रहण कर उन्हें आचरण में लाया जाय तो आध्यात्मिक पंथ पर पाठकगण अवश्य अग्रसर होंगे।

प्रारम्भ

यह एक साधारण-सा नियम है कि गत जन्मों के शुभ कर्मों के फलस्वरूप ही हमें संतों का सान्निध्य और उनकी कृपा प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ हेमाडपंत स्वयं अपनी घटना प्रस्तुत करते हैं। वे अनेक वर्षों तक बम्बई के उपनगर बांद्रा के स्थानीय न्यायाधीश रहे। पीर मौलाना नामक एक मुस्लिम संत भी वहीं निवास करते थे। उनके दर्शनार्थ अनेक हिन्दू, पारसी और अन्य धर्मावलंबी वहाँ जाया करते थे। उनके मुजावर (पुजारी) ने हेमाडपंत से भी उनका दर्शन करने के लिये बहुत आग्रह किया, परन्तु किसी न किसी कारण वश उनकी भेंट उनसे न हो सकी। अनेक वर्षों के उपरान्त जब उनका शुभ काल आया तब वे शिरडी पहुँचे और बाबा के दरबार में जाकर स्थायी रूप से सम्मिलित हो गए। भाग्यहीनों को संतसमागम की प्राप्ति कैसे हो सकती है? केवल वे ही सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें ऐसा अवसर प्राप्त हो।

संतों द्वारा लोकशिक्षा

संतों द्वारा लोकशिक्षा का कार्य चिरकाल से ही इस विश्व में संपादित होता आया है। अनेकों संत भिन्न-भिन्न स्थानों पर किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्वयं प्रगट होते हैं। यद्यपि उनका कार्यस्थल भिन्न होता है, परन्तु वे सब पूर्णतः एक ही हैं। वे सब उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की संचालनशक्ति के अंतर्गत एक ही लहर में कार्य करते

हैं। उन्हें प्रत्येक के कार्य का परस्पर ज्ञान रहता है और आवश्यकतानुसार परस्पर कमी की पूर्ति करते हैं, जो निम्नलिखित घटना द्वारा स्पष्ट है।

श्री. ठाकुर

श्री. व्ही.एच्. ठाकुर, बी.ए. रेव्हेन्यू विभाग में एक कर्मचारी थे। वे एक समय भूमिमापक दल के साथ कार्य करते हुए बेलगाँव के समीप वडगाँव नामक ग्राम में पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक कानड़ी संत पुरुष (आप्पा) के दर्शन कर उनकी चरण वन्दना की। वे अपने भक्तों को निश्चलदासकृत "विचार-सागर" नामक ग्रंथ (जो वेदान्त के विषय में है) का भावार्थ समझा रहे थे। जब श्री. ठाकुर उनसे बिदाई लेने लगे तो उन्होंने कहा, तुम्हें इस ग्रंथ का अध्ययन अवश्य करना चाहिये और ऐसा करने से तुम्हारी इच्छाएँ पूर्ण हो जायेंगी तथा जब कार्य करते-करते कालान्तर में तुम उत्तर दिशा में जाओगे तो सौभाग्यवश तुम्हारी एक महान् संत से भेंट होगी, जो मार्ग-प्रदर्शन कर तुम्हारे हृदय को शांति और सुख प्रदान करेंगे।

बाद में उनका स्थानांतरण जुन्नर को हो गया, जहाँ कि नाणेघाट पार करके जाना पड़ता था। यह घाट अधिक गहरा और पार करने में कठिन था। इसलिये उन्हें भैंसे की सवारी कर घाट पार करना पड़ा, जो उन्हें अधिक असुविधाजनक तथा कष्टकर प्रतीत हुआ। इसके पश्चात् ही उनका स्थानांतरण कल्याण में एक उच्च पद पर हो गया और वहाँ उनका नानासाहेब चाँदोरकर से परिचय हो गया। उनके द्वारा उन्हें श्री साईबाबा के संबंध में बहुत कुछ ज्ञात हुआ और उन्हें उनके दर्शन की तीव्र उत्कण्ठा हुई। दूसरे दिन ही नानासाहेब शिरडी को प्रस्थान कर रहे थे। उन्होंने श्री. ठाकुर से भी अपने साथ चलने का आग्रह किया। ठाणे के दीवानी-न्यायालय में एक मुकदमे के संबंध में उनकी उपस्थिति आवश्यक होने के कारण वे उनके साथ न जा सके। इस कारण नानासाहेब अकेले ही रवाना हो गये। ठाणे पहुँचने पर मुकदमे की तारीख आगे के लिए बढ़ गई। इसलिए उन्हें नानासाहेब का साथ न देने पर पश्चात्ताप हुआ। फिर वे शिरडी पहुँचे, तब वहाँ उन्हें ज्ञात हुआ कि नानासाहेब पिछले दिन ही यहाँ से चले गये हैं। वे अपने कुछ मित्रों के साथ, जो उन्हें वहीं मिल गये थे, श्री साईबाबा के दर्शन को गए। उन्होंने बाबा के दर्शन किये और उनके चरणकमलों की आराधना कर अत्यन्त हर्षित हुए। उन्हें रोमांच हो आया और उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ प्रवाहित होने लगीं। त्रिकालदर्शी बाबा ने उनसे कहा - इस स्थान का मार्ग इतना सुगम नहीं, जितना कि कानड़ी संत अप्पा के उपदेश या नाणेघाट पर भैंसे की सवारी थी। आध्यात्मिक पथ पर चलने के लिये

तुम्हें घोर परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि वह अत्यन्त कठिन पथ है। जब श्री. ठाकुर ने हेतुगर्भ शब्द सुने, जिनका अर्थ उनके अतिरिक्त और कोई न जानता था तो उनके हर्ष का पारावार न रहा और उन्हें कानड़ी संत के वचनों की स्मृति हो आई। तब उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर बाबा के चरणों पर अपना मस्तक रखा और उनसे प्रार्थना की कि "प्रभु, मुझ पर कृपा करो और इस अनाथ को अपने चरणकमलों की शीतलछाया में स्थान दो।" तब बाबा बोले, "जो कुछ अप्पा ने कहा, वह सत्य था। उसका अभ्यास कर उसके अनुसार ही तुम्हें आचरण करना चाहिये। व्यर्थ बैठने से कुछ लाभ न होगा। जो कुछ तुम पठन करते हो, उसको आचरण में भी लाओ, अन्यथा उसका उपयोग ही क्या? गुरु कृपा के बिना ग्रंथावलोकन तथा आत्मानुभूति निरर्थक ही है।" श्री. ठाकुर ने अभी तक केवल 'विचार सागर' ग्रन्थ में सैद्धांतिक प्रकरण ही पढ़ा था, परन्तु उसकी प्रत्यक्ष व्यवहार प्रणाली तो उन्हें शिरडी में ही ज्ञात हुई। एक दूसरी कथा भी इस सत्य का और अधिक सशक्त प्रमाण है।

श्री. अनंतराव पाटणकर

पूना के एक महाशय, श्री. अनंतराव पाटणकर श्री साईबाबा के दर्शनों के इच्छुक थे। उन्होंने शिरडी आकर बाबा के दर्शन किये। दर्शनों से उनके नेत्र शीतल हो गये और वे अति प्रसन्न हुए। उन्होंने बाबा के श्री चरण छुए और यथायोग्य पूजन करने के उपरान्त बोले, "मैंने बहुत कुछ पठन किया। वेद, वेदांत और उपनिषदों का भी अध्ययन किया तथा अन्य पुराण भी श्रवण किये, फिर भी मुझे शान्ति न मिल सकी। इसलिये मेरा पठन व्यर्थ ही सिद्ध हुआ। एक निरा अज्ञानी भक्त मुझसे कहीं श्रेष्ठ है। जब तक मन को शांति नहीं मिलती, तब तक ग्रन्थावलोकन व्यर्थ ही है। मैंने ऐसा सुना है कि आप केवल अपनी दृष्टि मात्र से और विनोदपूर्ण वचनों द्वारा दूसरों के मन को सरलतापूर्वक शान्ति प्रदान कर देते हैं। यही सुनकर मैं भी यहाँ आया हूँ। कृपा कर मुझ दास को भी आशीर्वाद दीजिये।" तब बाबा ने निम्नलिखित कथा कहीः-

घोड़ी की लीद के नौ गोले (नवधा भक्ति)

एक समय एक सौदागर यहाँ आया। उसके सम्मुख ही एक घोड़ी ने लीद की। जिज्ञासु सौदागर ने अपनी धोती का एक छोर बिछाकर उसमें लीद के नौ गोले रख लिये और इस प्रकार उसके चित्त को शांति प्राप्त हुई।" श्री. पाटणकर इस कथा का कुछ भी अर्थ न समझ सके। इसलिये उन्होंने श्री. गणेश दामोदर उपनाम दादा केलकर से अर्थ समझाने की प्रार्थना की और पूछा कि "बाबा के कहने का अभिप्राय क्या है?"

वे बोले कि "जो कुछ बाबा कहते हैं, उसे मैं स्वयं भी अच्छी तरह नहीं समझ सकता, परंतु उनकी प्रेरणा से ही मैं जो कुछ समझ सका हूँ, वह तुम से कहता हूँ। घोड़ी है ईश-कृपा, और नौ एकत्रित गोले हैं नवविधा[१] भक्ति-यथा (१) श्रवण (२) कीर्त्तन (३) नामस्मरण (४) पादसेवन (५) अर्चन (६) वन्दन (७) दास्य या दासता (८) सख्यता तथा (९) आत्मनिवेदन। ये भक्ति के नौ प्रकार हैं। इनमें से यदि एक को भी सत्यता से कार्यरूप में लाया जाय तो भगवान श्रीहरि अति प्रसन्न होकर भक्त के घर प्रगट हो जायेंगे। समस्त साधनायें अर्थात् जप, तप, योगाभ्यास तथा वेदों के पठन-पाठन में जब तक भक्ति का सम्पुट न हो, बिलकुल शुष्क ही हैं। वेदज्ञानी या ब्रह्मज्ञानी की कीर्ति भक्तिभाव के अभाव में निरर्थक है। आवश्यकता है तो केवल पूर्ण भक्ति की। अपने को भी उसी सौदागर के समान ही जानकर और व्यग्रता तथा उत्सुकतापूर्वक सत्य की खोज कर नौ प्रकार की भक्ति को प्राप्त करो। तब कहीं तुम्हें दृढ़ता तथा मानसिक शांति प्राप्त होगी।"

दूसरे दिन जब श्री. पाटणकर बाबा को प्रणाम करने गये तो बाबा ने पूछा कि "क्या तुमने लीद के नौ गोले एकत्रित किये?" उन्होंने कहा कि "मैं अनाश्रित हूँ। आपकी कृपा के बिना उन्हें सरलतापूर्वक एकत्रित करना संभव नहीं है।" बाबा ने उन्हें आशीर्वाद देकर सांत्वना दी कि "तुम्हें सुख और शांति प्राप्त हो जायेगी", जिसे सुनकर श्री. पाटणकर के हर्ष का पारावार न रहा।

पंढरपुर के वकील

भक्तों के दोष दूर कर, उन्हें उचित पथ पर ला देने की बाबा की त्रिकालज्ञता की एक छोटी-सी कथा का वर्णन कर इस अध्याय को समाप्त करेंगे। एक समय पंढरपुर से एक वकील शिरडी आये। उन्होंने बाबा के दर्शन कर उन्हें प्रणाम किया तथा कुछ दक्षिणा भेंट देकर एक कोने में बैठ वार्त्तालाप सुनने लगे। बाबा उनकी ओर देख कर कहने लगे कि "लोग कितने धूर्त्त हैं, जो यहाँ आकर चरणों पर गिरते और दक्षिणा देते हैं, परंतु भीतर से पीठ पीछे गालियाँ देते रहते हैं। कितने आश्चर्य की बात है न?" यह पगड़ी वकील के सिर पर ठीक बैठी और उन्हें उसे पहननी पड़ी। कोई भी इन शब्दों का अर्थ न समझ सका। परन्तु वकील साहब इसका गूढ़ार्थ समझ गये, फिर भी वे नतशिर बैठे ही रहे। वाड़े को लौटकर वकील साहब ने काकासाहेब दीक्षित को बतलाया कि बाबा ने जो कुछ उदाहरण दिया और जो मेरी ही ओर लक्ष्य कर कहा गया

१. श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणो पादसेवनम्। अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यम् आत्मनिवेदनम्॥

था, वह सत्य है। वह केवल चेतावनी ही थी कि मुझे किसी की निन्दा न करनी चाहिए। एक समय जब उपन्यायाधीश श्री. नूलकर स्वास्थ्य लाभ करने के लिये पंढरपुर से शिरडी आकर ठहरे तो बाररूम में उनके संबंध में चर्चा हो रही थी। विवाद का विषय था कि जिस व्याधि से उपन्यायाधीश अस्वस्थ हैं, क्या बिना औषधि सेवन किये केवल साईबाबा की शरण में जाने से ही उससे छुटकारा पाना सम्भव है? और क्या श्री. नूलकर सदृश एक शिक्षित व्यक्ति को इस मार्ग का अवलम्बन करना उचित है? उस समय श्री. नूलकर का और साथ ही श्री साईबाबा का भी बहुत उपहास किया गया। मैंने भी इस आलोचना में हाथ बँटाया था। श्री साईबाबा ने मेरे उसी दूषित आचरण पर प्रकाश डाला है। यह मेरे लिये उपहास नहीं, वरन् एक उपकार है, जो केवल परामर्श है कि मुझे किसी की निन्दा न करनी चाहिए और न ही दूसरों के कार्यों में विघ्न डालना चाहिये।"

शिरडी और पंढरपुर में लगभग ३०० मील का अन्तर है। फिर भी बाबा ने अपनी सर्वज्ञता द्वारा जान लिया कि बाररूम में क्या चल रहा था? मार्ग में आने वाली नदियाँ, जंगल और पहाड़ उनकी सर्वज्ञता के लिये रोड़ा न थे। वे सबके हृदय की गुह्य बात जान लेते थे और उनसे कुछ छिपा न था। समीपस्थ या दूरस्थ प्रत्येक वस्तु उन्हें दिन के प्रकाश के समान जाज्वल्यमान थी तथा उनकी सर्वव्यापक दृष्टि से ओझल न थी। इस घटना से वकीलसाहब को शिक्षा मिली कि कभी किसी का छिद्रान्वेषण एवं निंदा नहीं करनी चाहिए।

यह कथा केवल वकीलसाहब को ही नहीं, वरन् सबको शिक्षाप्रद है। श्री साईबाबा की महानता कोई न आँक सका और न ही उनकी अद्भुत लीलाओं का अंत ही पा सका। उनकी जीवनी भी तदनुरूप ही है, क्योंकि वे परब्रह्मस्वरूप हैं।

॥ श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु। शुभं भवतु ॥

अध्याय - २२

सर्प-विष से रक्षा

(१) श्री. बालासाहेब मिरीकर (२) श्री. बापूसाहेब बूटी (३) श्री. अमीर शक्कर (४) श्री. हेमाडपंत।

बाबा की सर्प मारने पर सलाह प्रस्तावना

श्री साईबाबा का ध्यान कैसे किया जाय? उस सर्वशक्तिमान् की प्रकृति अगाध है, जिसका वर्णन करने में वेद और सहस्त्रमुखी शेषनाग भी अपने को असमर्थ पाते हैं। भक्तों की स्वरूप वर्णन से रुचि नहीं। उनकी तो दृढ़ धारणा है कि आनन्द की प्राप्ति केवल उनके श्रीचरणों से ही संभव है। उनके चरणकमलों के ध्यान के अतिरिक्त उन्हें अपने जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति का अन्य मार्ग विदित ही नहीं। हेमाडपंत भक्ति और ध्यान का जो एक अति सरल मार्ग सुझाते हैं, वह यह है:-

कृष्ण पक्षके आरम्भ होने पर चन्द्र-कलाएँ दिन प्रतिदिन घटती चलती हैं तथा उनका प्रकाश भी क्रमशः क्षीण होता जाता है और अन्त में अमावस्या के दिन चन्द्रमाके पूर्ण विलीन रहने पर चारों ओर निशा का भयंकर अँधेरा छा जाता है, परन्तु जब शुक्ल पक्ष का प्रारंभ होता है तो लोग चन्द्र-दर्शन के लिए अति उत्सुक हो जाते हैं। इसके बाद द्वितीया को जब चन्द्र अधिक स्पष्ट गोचर नहीं होता, तब लोगों को वृक्ष की दो शाखाओं के बीच से चन्द्रदर्शन के लिये कहा जाता है और जब इन शाखाओं के बीच उत्सुकता और ध्यानपूर्वक देखने का प्रयत्न किया जाता है तो दूर क्षितिज पर छोटी-सी चन्द्र रेखा के दृष्टिगोचर होते ही मन अति प्रफुल्लित हो जाता है। इसी सिद्धांत का अनुमोदन करते हुए हमें बाबा के श्री दर्शन का भी प्रयत्न करना चाहिये। बाबा के चित्र की ओर देखो। अहा, कितना सुन्दर है? वे पैर मोड़ कर बैठे हैं और दाहिना पैर बायें घुटने पर रखा गया है। बायें हाथ की अँगुलियाँ दाहिने चरण पर फैली हुई हैं। दाहिने पैर के अँगूठे पर

तर्जनी और मध्यमा अँगुलियाँ फैली हुई हैं। इस आकृति से बाबा समझा रहे हैं कि यदि तुम्हें मेरे आध्यात्मिक दर्शन करने की इच्छा हो तो अभिमानशून्य और विनम्र होकर उक्त दो अँगुलियों के बीच से मेरे चरण के अँगूठे का ध्यान करो। तब कहीं तुम उस सत्य स्वरूप का दर्शन करने में सफल हो सकोगे। भक्ति प्राप्त करने का यह सब से सुगम पंथ है।

अब एक क्षण श्री साईबाबा की जीवनी का भी अवलोकन करें। साईबाबा के निवास से ही शिरडी तीर्थस्थल बन गया है। चारों ओर के लोगों की वहाँ भीड़ प्रति दिन बढ़ने लगी है तथा धनी और निर्धन सभी को किसी न किसी रूप में लाभ पहुँच रहा है। बाबा के असीम प्रेम, उनके अद्‌भुत ज्ञानभंडार और सर्वव्यापकता का वर्णन करने की सामर्थ्य किसे है? धन्य तो वही है, जिसे कुछ अनुभव हो चुका है। कभी-कभी वे ब्रह्म में निमग्न रहने के कारण दीर्घ मौन धारण कर लिया करते थे। कभी-कभी वे चैतन्यघन और आनन्द-मूर्त्ति बन भक्तों से घिरे हुए रहते थे। कभी दृष्टान्त देते तो कभी हास्य-विनोद किया करते थे। कभी सरल चित्त रहते तो कभी क्रुद्ध भी हो जाया करते थे। कभी संक्षिप्त और कभी घंटों प्रवचन किया करते थे। लोगों की आवश्यकतानुसार ही भिन्न-भिन्न प्रकार के उपदेश देते थे। उनकी जीवनी और अगाध ज्ञान वाचा से परे थे। उनके मुखमंडल के अवलोकन, वार्त्तालाप करने और लीलाएँ सुनने की इच्छाएँ सदा अतृप्त ही बनी रहीं। फिर भी हम फूले न समाते थे। जलवृष्टि के कणों की गणना की जा सकती है, वायु को भी चर्मकी थैली में संचित किया जा सकता है, परन्तु बाबा की लीलाओं का कोई भी अंत न पा सका। अब उन लीलाओं में से एक लीला का यहाँ भी दर्शन करें। भक्तों के संकटों के घटित होने के पूर्व ही बाबा उपयुक्त अवसर पर किस प्रकार उनकी रक्षा किया करते थे? श्री. बालासाहेब मिरीकर, जो सरदार काकासाहेब के सुपुत्र तथा कोपरगाँव के मामलतदार थे, एक बार दौरे पर चितली जा रहे थे। तभी मार्ग में, वे साईबाबा के दर्शनार्थ शिरडी पधारे। उन्होंने मसजिद में जाकर बाबा की चरण-वन्दना की और सदैव की भाँति स्वास्थ्य तथा अन्य विषयों पर चर्चा की। बाबा ने उन्हें चेतावनी देकर कहा कि "क्या तुम अपनी द्वारकामाई को जानते हो?" श्री. बालासाहेब इसका कुछ अर्थ न समझ सके, इसीलिए वे चुप ही रहे। बाबा ने उनसे पुनः कहा कि "जहाँ तुम बैठे हो, वही द्वारकामाई है। जो उसकी गोद में बैठता है, वह अपने बच्चों के समस्त दुःखों और कठिनाइयों को दूर कर देती है। यह मसजिद माई परम दयालु है। सरल हृदय भक्तों की तो वह माँ है और संकटों में उनकी रक्षा अवश्य करेगी। जो उसकी गोद में एक बार बैठता है, उसके समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं। जो

उसकी छत्रच्छाया में विश्राम करता है, उसे आनन्द और सुख की प्राप्ति होती है।" तदुपरांत बाबा ने उन्हें उदी देकर अपना वरद हस्त उनके मस्तक पर रख आशीर्वाद दिया।

जब श्री. बालासाहेब जाने के लिये उठ खड़े हुए तो बाबा बोले कि "क्या तुम लम्बे बाबा (अर्थात् सर्प) से परिचित हो?" और अपनी बाईं मुट्ठी बन्द कर उसे दाहिने हाथ की कुहनी के पास ले जाकर दाहिने हाथ को साँप के सदृश हिलाकर बोले कि "वह अति भयंकर है, परन्तु द्वारकामाई के लालों का वह कर ही क्या सकता है? जब स्वयं ही द्वारकामाई उनकी रक्षा करने वाली है तो सर्प की सामर्थ्य ही क्या है?" वहाँ उपस्थित लोग इसका अर्थ तथा मिरीकर को इस प्रकार चेतावनी देने का कारण जानना चाहते थे, परन्तु पूछने का साहस किसी में भी न होता था। बाबा ने शामा को बुलाया और बालासाहेब के साथ जाकर चितली यात्रा का आनन्द लेने की आज्ञा दी। तब शामा ने जाकर बाबा का आदेश बालासाहेब को सुनाया। वे बोले कि मार्ग में असुविधायें बहुत हैं, अतः आपको व्यर्थ ही कष्ट उठाना उचित नहीं है। बालासाहेब ने जो कुछ कहा, वह शामा ने बाबा को बताया। बाबा बोले कि "अच्छा ठीक है, न जाओ। सदैव उचित अर्थ ग्रहणकर श्रेष्ठ कार्य ही करना चाहिये। जो कुछ होने वाला है, सो तो होकर ही रहेगा।"

बालासाहेब ने पुनः विचार कर शामा को अपने साथ चलने के लिये कहा। तब शामा पुनः बाबा की आज्ञा प्राप्त कर बालासाहेब के साथ ताँगे में रवाना हो गये। वे नौ बजे चितली पहुँचे और मारुति मंदिर में जाकर ठहरे। आफिस के कर्मचारीगण अभी नहीं आये थे, इस कारण वे यहाँ-वहाँ की चर्चायें करने लगे। बालासाहेब दैनिक पत्र पढ़ते हुए चटाई पर शांतिपूर्वक बैठे थे। उनकी धोती का ऊपरी सिरा कमर पर पड़ा हुआ था और उसी के एक भाग पर एक सर्प बैठा हुआ था। किसी का भी ध्यान उधर न था। वह सी-सी करता हुआ आगे रेंगने लगा। यह आवाज सुनकर चपरासी दौड़ा और लालटेन ले आया। सर्प को देखकर वह 'साँप साँप' कहकर उच्च स्वर में चिल्लाने लगा। तब बालासाहेब अति भयभीत होकर काँपने लगे। शामा को भी आश्चर्य हुआ। तब वे तथा अन्य व्यक्ति वहाँ से धीरे से हटे और अपने हाथ में लाठियाँ ले लीं। सर्प धीरे-धीरे कमर से नीचे उतर आया। तब लोगों ने उसका तत्काल ही प्राणांत कर दिया। जिस संकट की बाबा ने भविष्यवाणी की थी, वह टल गया और साई-चरणों में बालासाहेब का प्रेम दृढ़ हो गया।

बापूसाहेब बूटी

एक दिन महान् ज्योतिषी श्री. नानासाहेब डेंगले ने बापूसाहेब बूटी से (जो उस समय शिरडी में ही थे) कहा " आज का दिन तुम्हारे लिए अत्यन्त अशुभ है और तुम्हारे जीवन को भयप्रद है। " यह सुनकर बापूसाहेब बड़े अधीर हो उठे। जब सदैव की भाँति वे बाबा के दर्शन करने गये तो वे बोले कि "ये नाना क्या कहते हैं? वे तुम्हारी मृत्यु की भविष्यवाणी कर रहे हैं, परन्तु तुम्हें भयभीत होने की किंचित् मात्र भी आवश्यकता नहीं है। इनसे दृढ़तापूर्वक कह दो कि अच्छा देखें, काल मेरा किस भाँति अपहरण करता है। " जब संध्यासमय बापू अपने शौच-गृह में गये तो वहाँ उन्हें एक सर्प दिखाई दिया। उनके नौकर ने भी सर्प को देख लिया और उसे मारने को एक पत्थर उठाया। बापूसाहेब ने एक लम्बी लकड़ी मँगवाई, परन्तु लकड़ी आने से पूर्व ही वह साँप दूरी पर रेंगता हुआ दिखाई दिया और तुरन्त ही दृष्टि से ओझल हो गया। बापूसाहेब को बाबा के अभयपूर्ण वचनों का स्मरण हुआ और बड़ा ही हर्ष हुआ।

अमीर शक्कर

अमीर शक्कर कोरले गाँव का निवासी था, जो कोपरगाँव तालुके में है। वह जाति का कसाई था और बान्द्रा में दलाली का धंधा किया करता था। वह प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक था। एक बार वह गठिया रोग से अधिक कष्ट पा रहा था। जब उसे खुदा की स्मृति आई, तब काम-धंधा छोड़कर वह शिरडी आया और बाबा से रोग-निवृत्ति की प्रार्थना करने लगा। तब बाबा ने उसे चावड़ी में रहने की आज्ञा दे दी। चावड़ी उस समय एक अस्वास्थ्यकारक स्थान होने के कारण इस प्रकार के रोगियों के लिये सर्वथा ही अयोग्य था। गाँव का अन्य कोई भी स्थान उसके लिये उत्तम होता, परन्तु बाबा के शब्द तो निर्णयात्मक तथा मुख्य औषधिस्वरूप थे। बाबा ने उसे मसजिद में न आने दिया और चावड़ी में ही रहने की आज्ञा दी। वहाँ उसे बहुत लाभ हुआ। बाबा प्रातः और सायंकाल चावड़ी पर से निकलते थे तथा एक दिन के अंतर से जुलूस के साथ वहाँ आते और वहीं विश्राम किया करते थे। इसलिये अमीर को बाबा का सान्निध्य सरलतापूर्वक प्राप्त हो जाया करता था। अमीर वहाँ पूरे नौ मास रहा। जब किसी अन्य कारणवश उसका मन उस स्थान से ऊब गया, तब एक रात्रि में वह चोरी से उस स्थान को छोड़कर कोपरगाँव की धर्मशाला में जा ठहरा। वहाँ पहुँचकर उसने वहाँ एक फकीर को मरते हुए देखा, जो पानी माँग रहा था। अमीर ने उसे पानी दिया, जिसे पीते ही उसका देहांत हो गया। अब अमीर किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया। उसे विचार आया कि

अधिकारियों को इसकी सूचना दे दूँ तो मैं ही मृत्यु के लिये उत्तरदायी ठहराया जाऊँगा और प्रथम सूचना पहुँचाने के नाते कि मुझे अवश्य इस विषय की अधिक जानकारी होगी, सबसे प्रथम मैं ही पकड़ा जाऊँगा। तब बिना आज्ञा शिरडी छोड़ने की उतावली पर उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसने बाबा से मन ही मन प्रार्थना की और शिरडी लौटने का निश्चय कर उसी रात्रि बाबा का नाम लेते हुए पौ फटने से पूर्व ही शिरडी वापस पहुँचकर चिंतामुक्त हो गया। फिर वह चावड़ी में बाबा की इच्छा और आज्ञानुसार ही रहने लगा और शीघ्र ही रोगमुक्त हो गया।

एक समय ऐसा हुआ कि अर्द्ध रात्रि को बाबा ने जोर से पुकारा कि "ओ अब्दुल! कोई दुष्ट प्राणी मेरे बिस्तर पर चढ़ रहा है। " अब्दुल ने लालटेन लेकर बाबा का बिस्तर देखा, परन्तु वहाँ कुछ भी न दिखा। बाबा ने ध्यानपूर्वक सारे स्थान का निरीक्षण करने को कहा और वे अपना सटका भी जमीन पर पटकने लगे। बाबा की यह लीला देखकर अमीर ने सोचा कि हो सकता है कि बाबा को किसी साँप के आने की शंका हुई हो।

दीर्घ काल तक बाबा की संगति में रहने के कारण अमीर को उनके शब्दों और कार्यों का अर्थ समझ में आ गया था। बाबा ने अपने बिस्तर के पास कुछ रेंगता हुआ देखा, तब उन्होंने अब्दुल से बत्ती मँगवाई और एक साँप को कुंडली मारे हुये वहाँ बैठे देखा, जो अपना फन हिला रहा था। फिर वह साँप तुरन्त ही मार डाला गया। इस प्रकार बाबा ने सामयिक सूचना देकर अमीर के प्राणों की रक्षा की।

हेमाडपंत (बिच्छू और साँप)

(१) बाबा की आज्ञानुसार काकासाहेब दीक्षित श्रीएकनाथ महाराज के दो ग्रन्थों भागवत और भावार्थरामायण का नित्य पारायण किया करते थे। एक समय जब रामायण का पाठ हो रहा था, तब श्री हेमाडपंत भी श्रोताओं में सम्मिलित थे। अपनी माँ के आदेशानुसार किस प्रकार हनुमान ने श्री राम की महानता की परीक्षा ली – यह प्रसंग चल रहा था। सब श्रोता-जन मंत्रमुग्ध हो रहे थे तथा हेमाडपंत की भी वही स्थिति थी। पता नहीं कहाँ से एक बड़ा बिच्छू उनके ऊपर आ गिरा और उनके दाहिने कंधे पर बैठ गया, जिसका उन्हें कोई भान तक न हुआ। ईश्वर को श्रोताओं की रक्षा स्वयं करनी पड़ती है। अचानक ही उनकी दृष्टि कंधे पर पड़ गई। उन्होंने उस बिच्छू को देख लिया। वह मृतप्राय-सा प्रतीत हो रहा था, मानो वह भी कथा के आनन्द में तल्लीन हो। हरि-इच्छा जान कर उन्होंने श्रोताओं में बिना विघ्न डाले उसे अपनी धोती के दोनों

सिरे मिलाकर उसमें लपेट लिया और दूर ले जाकर बगीचे में छोड़ दिया। (२) एक अन्य अवसर पर संध्या समय काकासाहेब वाड़े के ऊपरी खंड में बैठे हुये थे, तभी एक साँप खिड़की की चौखट के एक छिद्र में से भीतर घुस आया और कुंडली मारकर बैठ गया। बत्ती लाने पर पहले तो वह थोड़ा चमका, फिर वहीं चुपचाप बैठा रहा और अपना फन हिलाने लगा। बहुत-से लोग छड़ी और डंडा लेकर वहाँ दौड़े। परन्तु वह एक ऐसे सुरक्षित स्थान पर बैठा था, जहाँ उस पर किसी के प्रहार का कोई भी असर न पड़ता था। लोगों का शोर सुनकर वह शीघ्र ही उसी छिद्र में से अदृश्य हो गया, तब कहीं सब लोगों की जान में जान आई।

बाबा के विचार

एक भक्त मुक्ताराम कहने लगा कि चलो, अच्छा ही हुआ, जो एक जीव बेचारा बच गया। श्री. हेमाडपंत ने उसकी अवहेलना कर कहा कि साँप को मारना ही उचित है। इस कारण इस विषय पर वादविवाद होने लगा। एक का मत था कि साँप तथा उसके सदृश जन्तुओं को मार डालना ही उचित है, किन्तु दूसरेका इसके विपरीत मत था। रात्रि अधिक हो जाने के कारण किसी निष्कर्ष पर पहुँचे बिना ही उन्हें विवाद स्थगित करना पड़ा। दूसरे दिन यह प्रश्न बाबा के समक्ष लाया गया। तब बाबा निर्णयात्मक वचन बोले कि "सब जीवों में और समस्त प्राणियों में ईश्वर का निवास है, चाहे वह साँप हो या बिच्छू। वे ही इस विश्व के नियंत्रणकर्त्ता हैं और सब प्राणी साँप, बिच्छू इत्यादि उनकी आज्ञा का ही पालन किया करते हैं। उनकी इच्छा के बिना कोई भी दूसरों को हानि नहीं पहुँचा सकता। समस्त विश्व उनके अधीन है तथा स्वतंत्र कोई भी नहीं है। इसलिए हमें सब प्राणियों से दया और स्नेह करना चाहिए। संघर्ष एवं वैमनस्य या संहार करना छोड़कर शान्त चित्त से जीवन व्यतीत करना चाहिए। ईश्वर सबका ही रक्षक है।"

॥ श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु । शुभं भवतु ॥

सप्ताह पारायणः तृतीय विश्राम